चन्दामामा
मार्च १९६८

Chandamama
Press
VADAPALANI
MADRAS 26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

गुणों में श्रेष्ठ, स्वास्थ्यवर्द्धक अष्टवर्गयुक्त पौष्टिक रसायन है।
इसका सेवन बच्चे, बूढ़े और जवान हर मौसम में करते हैं।

डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) प्रा. लि., कलकत्ता - २९

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form IV), Newspapers (Central) Rules, 1956

1.	*Place of Publication*	:	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
2.	*Periodicity of Publication*	:	MONTHLY 1st of each Calendar month
3.	*Printer's Name*	:	B. V. REDDI,
	Nationality	:	INDIAN
	Address	:	Prasad Process (Pvt.) Ltd., 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
4.	*Publisher's Name*	:	B. VISWANATHA REDDI,
	Nationality	:	INDIAN
	Address	:	Managing Partner, Sarada Binding Works 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
5.	*Editor's Name*	:	CHAKRAPANI (A. V. Subba Rao)
	Nationality	:	INDIAN
	Address	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26.
6.	*Name & Address of individuals who own the paper*	:	SARADA BINDING WORKS: PARTNERS, 1. Sri. B. Viswanatha Reddi, 2. Sri. B. L. N. Prasad, 3. Sri. B. Venugopal Reddi, 4. Sri. B. Venkatrama Reddy, 5. Smt. B. Seshamma, 6. Smt. B. Rajani Saraswathi, 7. Smt. A. Jayalakshmi, 8. Smt. K. Sarada.

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

1st March, 1968

B. VISWANATHA REDDI,
Signature of the Publisher

अपने
मुन्ने को
सर्दी-जुकाम से
परेशान
होने न दें

फ़ौरन आराम के लिये इसे विक्स वेपोरब मलिये।

सर्दी-जुकाम से मुन्ने का बुरा हाल है: नाक और आँखों से पानी बह रहा है, गला बैठ गया है, साँस लेने में तकलीफ़ हो रही है। फ़ौरन इसके नाक, गले, छाती और पीठ पर विक्स वेपोरब मलिये और आराम से सुला दीजिये। रातभर जबकि आपका मुन्ना मीठी नींद सोता रहेगा, विक्स वेपोरब की गरम भाप अपना असर करती रहेगी। सुबह तक सर्दी का असर जाता रहेगा और आपका मुन्ना हमेशा की तरह हंसता, खेलता और किलकता नज़र आयेगा।

रातों-रात सर्दी-जुकाम से आराम पहुंचाता है।

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

DENTAL CREAM

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

गोपाल का रहस्य

A GREAT NAME
AMARJOTHI
IN HANDLOOMS

मुझे अपनी साइकल पर
सवारी करने दोगे?

मैं तुम्हें एक
दौराला
मिठाई दूंगी!

दौराला मिठाईयां...
सब की मनभाती

करके अजमेर के नजदीक लखेरी के पास लड़ाई में हार गया। सन् १७९४ फ़रवरी १२ तारीख को पूना में अपनी ६७ साल की उम्र में उसका देहान्त हुआ।

महादाजी सिंधिया का वारिस उसका दत्तक पुत्र दौलतराव सिंधिया बना। उस वक्त उसकी उम्र तेरह साल की थी। महादाजी सिंधिया की मृत्यु से अंग्रेजवालों के लिए बड़ा फ़ायदा हुआ। क्योंकि वह अंग्रेजों की राह में पूरी रुकावट रहा।

अब महाराष्ट्र के सभी व्यवहारों का नेता नाना फड़नवीस बना। पहले महाराष्ट्र के लोग नर्मदा नदी के दक्षिण के इलाकों को खो चुके थे। उनको फिर से पाना है तो उन्हें मैसूर के टीपू सुलतान के साथ युद्ध करना ज़रूरी था। इसकी शुरुआत के रूप में महाराष्ट्रों ने निज़ाम से दोस्ती का समझौता (जुलाई १७८४) करके १७८५ दिसंबर पहली तारीख को हरिपंत फड़के के अधीन में पूना से महाराष्ट्र की फ़ौज मैसूर पर हमला करने भेजी गयी।

टीपू सुलतान अपने दुश्मन का सामना करने के लिए कोई अच्छी कोशिश न कर सका। इस बात का उसे डर था कि अंग्रेजों और महाराष्ट्रों के बीच समझौता होगा। इसलिए महाराष्ट्रों से दोस्ती करने के विचार से, १७८७ अप्रैल में संधि भी कर ली। इस संधि के अनुसार टीपू सुलतान को ४५ लाख रुपये देने पड़े। लेकिन यह संधि बहुत दिन तक अमल में न रही। जब १७८९ में अंग्रेजों और टीपू के बीच लड़ाई शुरू हुई तब महाराष्ट्रों और निज़ाम ने भी अंग्रेज सेनापति कार्नवालिस के साथ समझौता कर लिया। लेकिन इन तीन पक्षोंवाले समझौते में कोई सार न रहा। टीपू के हमले के डर से निज़ाम और महाराष्ट्रों के बीच दोस्ती तो हो गयी थी, लेकिन भीतर ही भीतर उनमें

दुश्मनी की आग सुलग रही थी। टीपू के डर के कम होते ही महाराष्ट्र के नेता पेशवा, दौलतराव सिंधिया, तुकोजी होल्कर और बीदार का राजा सब ने मिलकर निज़ाम पर धावा बोल दिया।

दोनों पक्षों के दलों में भयंकर युद्ध हुआ। सन् १७९५ मार्च में निज़ाम हार गया और संधि करके बहुत-सा धन, कुछ इलाके भी समझौते के अनुसार दिये। अंग्रेज़वालों ने समय पर निज़ाम की किसी प्रकार की मदद न की।

अंग्रेज़वालों और मैसूर के बीच युद्ध होने का कारण यह है कि अठारहवीं शताब्दी के अंत में हैदर और टीपू अंग्रेज़ों की उन्नति के मार्ग में राहु और केतु बने थे।

हैदर बिल्कुल पढ़ा-लिखा न था, लेकिन बहुत हिम्मतवाला था। वह मैसूर की सेना में वेतन-भत्ते के बिना काम करते, कई लड़ाइयों में अपनी बहादुरी दिखाकर, ऊपर उठा था। धीरे-धीरे वह यहाँ तक बढ़ा कि मैसूर राज्य के सभी अधिकार उसके हाथ में आ गये। उसकी उन्नति को देखकर महाराष्ट्रवाले, निज़ाम और अंग्रेज़ भी जलते थे।

सन् १७६५ में जब महाराष्ट्र उस पर चढ़ आये तब हैदर ने उनसे संधि करके, नुकसान भरे उनको बत्तीस लाख रुपये, गुत्ति और मालनूर के प्रांत सौंप दिये। सन् १७६६ नवंबर में मद्रास (अंग्रेज़) सरकार ने निज़ाम से सरकार जिले एवज में लिये और हैदर पर निज़ाम के द्वारा होनेवाले युद्ध में मदद देने को मान लिया। इस तरह कुल मिलाकर हैदर के विरुद्ध महाराष्ट्र, निज़ाम और अंग्रेज़ तीनों एक दल के रूप में संगठित हुए। लेकिन मैसूर पर पहले पहल हमला करनेवाले महाराष्ट्रों को धन देकर हैदर ने उनका मित्र बना लिया।

बहुत दिन पहले की बात है। एक छोटे-से गाँव में जमुनादास और रामदेई नामक दंपति थे। जमनादास खेतीबारी करता था। रामदेई घर के काम-काज के साथ दूध-दही बेचकर, पति की कमाई में अपनी कमाई भी जोड़ देती थी।

कुछ रुपयों के इकट्ठे होते ही जमनादास ने एक टूटा-फूटा घर खरीदा; उसकी मरम्मत करवाकर, पत्नी के साथ गृह-प्रवेश किया।

उस घर में उस दंपति के कदम रखते ही कुछ विचित्र बातें होने लगीं। एक दिन सुबह रामदेई को बुखार चढ़ आया। उसके पहले दिन शाम को जमनादास कहीं पड़ोसी गाँव में गया था। रामदेई ने सोचा कि पति के आने के पहले दही मथ कर मट्ठा बनावे और रसोई भी पूरा करे। लेकिन उसे उठने की ताकत नहीं थी। उठने की कोशिश करके फिर लेट गयी और सो गयी।

थोड़ी देर बाद फिर वह जाग गयी और बड़ी मुश्किल से रसोई घर में गयी। उसे यह देखकर बड़ा अचरज हुआ कि मट्ठा बिलोया गया है और उसमें से मक्खन निकालकर मटके में रखा गया है।

दरवाजे वैसे ही बंद थे। कौन भीतर आया! कैसे आया! यह सब काम कैसे हुए? बहुत सोचने पर भी रामदेई की समझ में कुछ न आया। जमनादास के आने पर पत्नी ने सारी बातें बतायीं; लेकिन वह पत्नी की बातों पर हँस कर रह गया।

कुछ दिन और बीत गये। रामदेई गर्भवती थी। वह सभी काम कर न पाती थी। कुछ काम वह वैसे ही छोड़ देती थी। लेकिन वह सब काम वैसे ही अपने आप हो जाते थे। रामदेई को यह सब

बड़ा विचित्र मालूम होता। उसे यह सोचकर डर लगता था कि कोई दिखाई नहीं देता, तो फिर कोई शैतान या भूत तो यह सब काम नहीं कर रहा है! वह जमनादास से कहती, वह यही जवाब देता था—"यह सब तुम कल्पना करती हो।"

रामदेई के प्रसव के दिन निकट आये। प्रसव के समय मदद देने रामदेई ने अपनी माँ गंगाबाई को खबर भेजी। लेकिन गंगाबाई ने यह संदेशा भेजा कि आजकल उसकी तबीयत ठीक नहीं रहती, अभी ठीक नहीं कह सकती कि आ सकूँगी कि नहीं। रामदेई यह सोचकर घबराने लगी कि अगर माँ न आ सकेगी तो मदद देनेवाला ही कौन है? लेकिन, प्रसव के एक दिन पहले गंगाबाई आ ही गयी। उसको देख दंपति दोनों खुश हुए। प्रसव के बाद कुछ दिन रहकर गंगाबाई अपने गाँव चली गयी।

गाँव जाने के बाद गंगाबाई दूसरे दिन फिर चली आयी। उसको दूसरे दिन ही आयी देख रामदेई को बड़ा आश्चर्य हुआ! जमनादास की समझ में भी नहीं आया कि सास इतनी जल्दी क्यों लौट आयी है?

"प्रसव के समय न आ सकी। क्या करती? एक महीने से बीमार थी! उठ भी नहीं पाती थी। दो-चार दिन हुए, खाट छोड़ के, दो दिन से टहलने लग गयी हूँ। बड़ी मुश्किल से तुम लोगों को देखने आयी।" गंगाबाई ने कहा।

बेटी और दामाद उसकी तरफ़ चकित हो क्यों देख रहे हैं, यह समझ न पायी और बोली—"क्यों री, प्रसव में मदद देने न आयी, इसलिए नाराज़ हो? ज़रा नाती को तो दिखाओ।"

"माँ! यह तुम क्या कहती हो? तुम्हीं ने तो यहाँ रहकर प्रसव कराया। अब ऐसी बातें करती हो, मानों कुछ नहीं जानती हो।" रामदेई ने पूछा।

गंगाबाई को यह सब बड़ा विचित्र मालूम हुआ। सारी बातें रामदेई के मुँह से सुनकर वह बोली—"कोई भूत या शैतान मेरे मकान में आया होगा। नहीं तो ऐसा कैसे हो सकता है?"

इस बार जमनादास का भी विश्वास जमा। अपनी गाय की कुटिया में आयी हुई औरत को उसने खुद अपनी आँखों से देखा था।

गंगाबाई ने समझाया कि भूत-प्रेत या शैतान हो तो देखते चुप नहीं बैठना है। सास की बात सुनकर पड़ोसी गाँव के ओझा को बुला लाने जमनादास रवाना हुआ।

उस रोज रात को जोर की वर्षा हुई। वर्षा की आवाज को सुन चौंक कर उठ बैठी। पिछले दिन उसने पिछवाड़े में मिर्चें सुखाये थे, वे शायद भीग जाय, जमनादास होते तो खुद जाता। लेकिन वह गाँव में नहीं है। अब क्या किया जाय। वह तो अकेली है। उसे उठना नहीं चाहिए। लेकिन चाहे जो हो जाय, रामदेई ने अपना दिल पत्थर बनाया। वैसे भी वर्षा में भीग जायेंगी। कुछ नहीं किया जा सकता। वह उठी नहीं।

सुबह, रामदेई ने उठकर देखा, मिर्चें का बोरा बरामदे में दीवार से टिकाया हुआ

शिथिलालय

[२]

[शिखिमुख नामक एक राज-कुमार जंगल में शिकार खेलने गया। वहाँ पर उसने एक कवच-धारी घुड़सवार पर, कुछ चोर-डाकुओं का हमला होते देख उसकी मदद की। उस घुड़सवार ने अपना नाम शिवकेसरी बताया। दोनों उस अँधेरे में ज्यों ही एक गाँव के निकट पहुँचे, त्यों ही देहाती सब उनकी ओर भागे आये। इसके बाद—]

शिखिमुख अपनी तरफ आनेवाले देहातियों को देख अचरज में आ गया। वे सब हथियारों से लैस थे। कुछ लोगों के हाथों में मशाल जल रहे थे। जो सबसे पहले उसके पास पहुँचे, वे उसके चारों तरफ़ घेर कर चिल्लाते, शोर मचाने लगे।

"यह सब क्या है? सारा देहात यहीं पर आ गया। क्या हुआ?" शिखिमुख ने उनसे पूछा, जो उसके चारों तरफ़ फैलकर उछल-कूद कर रहे थे।

"देहात में अभी खबर आयी कि जंगल में तुमको और एक विचित्र आदमी को पहाड़ी-डाकुओं ने मार डाला है। इसलिए सारा देहात निकल पड़ा है। अब लगता है कि या तो जंगल में भैंस आदि चरानेवाले देहाती बच्चों का कहना झूठ है या तुम और उस घोड़े के कवचधारी आदमी ने मिलकर

पहाड़ी डाकुओं को मार डाला होगा।" उन लोगों ने कहा।

शिखिमुख जोर से हँसते हुए विक्रमकेसरी के पास जाकर बोला—"देखा! हमारे देहात के बच्चों ने कैसे तिल का ताड़ बना रखा है। उन्होंने देहात में जाकर कहा है कि डाकुओं के हाथों में हम मारे गये। उन बच्चों ने तुम्हारा नाम लोहे का आदमी रखा है।"

विक्रमकेसरी को यह सब विनोद-सा लगा। इस बात की उसे खुशी हुई कि देहातियों में अच्छी मिल्लत है और वे अपने नेता के लड़के से बहुत स्नेह और प्रेम रखते हैं। यह युवक बहुत खुश हुआ। उसके मन में यह विचार आया कि उसके पिता ने जो बहुत बड़ा साहस का कार्य करने का बीड़ा उठाया है, उसमें डाकुओं की खूब मदद मिल सकती है।

शिवाल अपने कुछ साथियों के साथ अपने बेटे के पास आया। उसको देख शिखिमुख के चारों तरफ़ फैलकर हो-हल्ला मचानेवाले सब हट गये। शिवाल ने अपने बेटे के पास जाकर उसे गले लगाया। उसी समय मशाल की रोशनी में विक्रमकेसरी पर उसकी दृष्टि पड़ी।

शिवाल पल-भर के लिए चकित रहा। वह विक्रमकेसरी की ओर एकटक देखता रहा। फिर दो कदम आगे बढ़ाकर बोला—"कौन, प्रभु विक्रमकेसरी?" उसके कंठ में आनंद और आश्चर्य झलक रहा था।

विक्रमकेसरी ने उसके पास जाकर नमस्कार करते हुए कहा—"मैं विक्रमकेसरी ही हूँ। लेकिन आप मुझे नहीं पहचानते!"

शिवाल ने विक्रमकेसरी की ओर विस्मित दृष्टि दौड़ाते कहा—"जी हाँ! चालीस साल पहले की बात है। वह प्रभु भी मेरी उम्र का है। बूढ़ा हुआ होगा। हम दोनों

जब तुम्हारी उम्र के थे, सम्राट की फ़ौज में भर्ती होकर उत्तर में ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों तक विजय-यात्रा करके, सम्राट को हमने अपार धन और यश कमाया। असल में तुम कौन हो? मैं इस भ्रम में पड़ा हूँ कि आज फिर उस प्रभु विक्रमकेसरी को देख रहा हूँ।"

"मैं विक्रमकेसरी का पोता हूँ; मेरा नाम भी विक्रमकेसरी ही है। मैं अपने पिता के आदेश पर आपसे कुछ खास बातों पर चर्चा करने आया हूँ।" विक्रमकेसरी ने कहा।

"आश्चर्य है! मैंने सुना, तुम्हारे दादा मर गये हैं। फिर भी तुम्हारी यह शकल-सूरत मुझे भ्रम में डाल रही है। तुम्हारे पिताजी जयपाल कुमार हैं न? उन्होंने इस चाकर को याद ही नहीं रखा, बल्कि एक खास बात की चर्चा करने अपने पुत्र को ही भेजा! मेरा अचरज दूना होता जा रहा है। एक राज्य के अधिपति तुम्हारे पिताजी के लिए इस चाकर-गाँव के मुखिया से चर्चा करने के लिए कौन खास बात हो सकती है?" शिवाल ने पूछा।

"वह सारा समाचार देहात में पहुँचने पर बताऊँगा। मुझे तुम्हारे गाँव में पहुँचने से रोकने की कुछ दुष्टों ने जंगल में बड़ी कोशिश की।" विक्रमकेसरी ने कहा।

"यह समाचार जानकर ही हम सब जंगल के लिए रवाना हुए। लेकिन मुझे यह मालूम न था कि शिविकापुर के साथ मेरे पुराने मालिक का पोता भी है। बच्चों ने कोई लोहे का आदमी बताया। अच्छी बात है! दोनों सैनिक हैं। चलिये, गाँव चलेंगे।" शिवाल ने कहा।

आधे घंटे बाद सब लोग देहात पहुँचे, तो देखा कि शिवाल के घर के पास कई औरतें जमा होकर ज़ोर-ज़ोर से रोती-चिल्लाती बातें कर रही हैं। उन सब के

हाथों में पानी से भरी गगरियाँ थीं। शिवाल और बाकी देहातियों के पूछने पर औरतों ने बताया कि वे पानी लाने तालाब पर गयीं। वहाँ पर कुछ अजनबी थे। उन लोगों ने शिवाल के घर का पता पूछा। देखने में वे डाकू-लुटेरे जैसे लगते थे। सब के हाथों में हथियार थे।
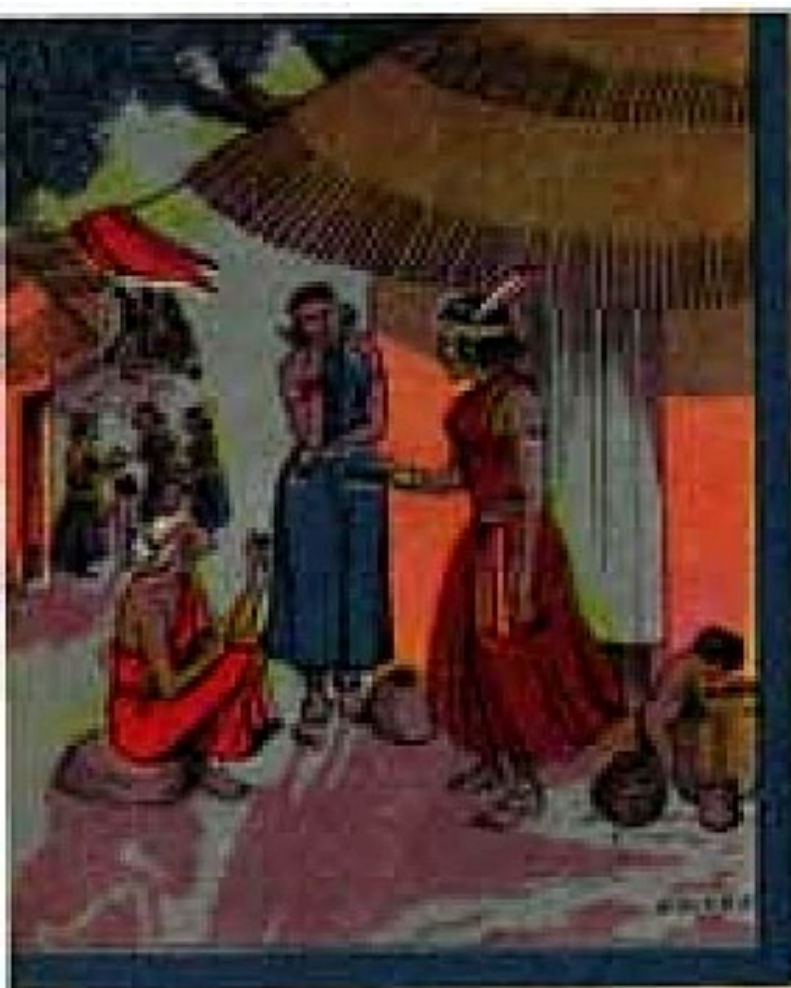
एक दो बार पूछने पर औरतों ने उन अजनबियों की पोशाकों का वर्णन किया। चरवाहों ने जो बातें बतायी थीं वे उनकी बातों से मेल खाती थीं। शिवाल झट घर पहुँचा और चित्रमकेसरी से बोला— "वे डाकू तो बड़े हिम्मतवर मालूम होते हैं। बिल्कुल अपरिचित प्रदेश में आकर, भरे-गाँव के एक घर पर हमला करने की बात सोच रहे हैं, हूँ! कैसी हिम्मत है! इसका फल उन्हें चखा दूँगा।"

"वे अगर इस घर पर हमला करते हैं तो इसका कारण आप नहीं, मैं हूँ। मैं शिखिमुख के साथ जब देहात की ओर रवाना हुआ तब उन लोगों ने देखा होगा। उनको मेरी जान से भी बढ़कर इस थैली की चीज़ें चाहिए थीं।" यह कहते घोड़े की जीन से लटकनेवाली थैली खोलकर चित्रमकेसरी ने शिवाल के हाथ पर धर दी।

शिवाल ने उस थैली को बड़ी सावधानी से कमरे के एक कोने में स्थित मूर्तियों के सामने रख दी और बोला— "रात बहुत है, आराम से बात कर सकते हैं। पहले खाना तो खावें!"

इसके बाद सब लोगों ने तरह-तरह के माँस और शराब का पान करते खूब भोजन किया। शिवाल दीवार से सटकर बैठा, हुक्के में तंबाकू डालकर आग लगा कश लेते हुए सामने कंबल पर बैठे चित्रमकेसरी और शिखिमुख को देख मुस्कुराते हुए बोला— "तुम दोनों को

अगल-बगल में देख मुझे प्रभु विक्रमकेसरी की याद आती है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि उनका पोता एक न एक दिन मेरे घर आकर मेरा मेहमान बनेगा। आज मुझे कितनी खुशी हो रही है। बता नहीं सकता। मेरा दिल ही जानता है।"

"मेरे पिताजी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि मुझे दूर देश से इतनी दूर की यात्रा करनी पड़ेगी! वे मेरे दादा और आपके बारे में भी कई अनोखी बातें बताया करते थे। लेकिन...आज मैं एक नयी खबर सुनाये देता हूँ। मेरे दादा विक्रमकेसरी आज से बीस साल पहले फिर एक बार ब्रह्मपुत्र नदी के आस-पास के कामाख्या नगर की तरफ गये थे। तब से वे आज तक नहीं लौटे। हमने सोचा, वे मर गये होंगे। दो महीने पहले हमें जो समाचार मिला, उससे मालूम होता है कि वे शायद जिंदा हैं।" विक्रमकेसरी ने कहा।

ये बातें सुनकर शिवाल ने विक्रमकेसरी की ओर अचरज के साथ देखते हुए पूछा—"प्रभु विक्रमकेसरी एक बार और ब्रह्मपुत्र के प्रदेश के जंगलों में गये थे? अगर यह घटना बीस साल पहले की है तो मुझे किसी के जरिये खबर कर देते तो मैं भी उनके साथ जाता! मुझे उन्होंने खबर तक क्यों न दी? मेरी समझ में नहीं आता। मैं सोचकर भी जवाब नहीं पाता हूँ। जरा बताओ, मेरे प्रभु फिर इतनी दूर क्यों गये?"

"उन्होंने मेरे पिता से कहा है कि वह कोई गुप्त समाचार है। और उनकी मृत्यु के पहले उसे जानना है।' इससे बढ़कर विवरण नहीं दिया। वे कहाँ क्यों रहते हैं? ऐसा कौन समाचार है जो हमें भी बता नहीं सकते थे? लेकिन दो महीने पहले हमारे दरबार के एक पंडित उत्तर

देश से लौटा। उसने मेरे दादा की कुछ और चीज़ें पिताजी को सौंप दीं। उनमें ताड़पत्रों की पाण्डुलिपियाँ ज़्यादा हैं। उनके कहने से मालूम होता है कि मेरे दादाजी वहाँ के पहाड़ों में कहीं संन्यासी बनकर रह रहे हैं। तो भी इसके लिए कोई खास सबूत नहीं मिलता।" विजयकेसरी ने समझाया।

विशाल थोड़ी देर तक घर भुलाये सोचता रहा और फिर पूछा—"तुम्हारी बातें सुनने में पागल होता जा रहा हूँ! मेरे प्रभु फिर उन भयंकर जंगलों में क्यों चले गये? यह कुछ समाचार क्या है? उनकी चीज़ें दरबारी पंडित को कैसे मिलीं?"

विजयकेसरी ने पंडित की कही सारी बातें आदि से अंत तक कह सुनायीं।

वह पंडित छोटी उम्र में घर छोड़, कई राज्यों में घूमता रहा। वहाँ अनेक विद्याएँ सीखकर बुढ़ापे में घर लौटा। वह ब्रह्मपुत्र नदी के आस-पास के वन-प्रदेशों में बहुत समय तक रहा। वहाँ की जंगली जाति के लोगों को दवा-दारू करके उनकी बीमारियों में मदद देता रहा। उनमें कई जाति और भाषाओं के लोग हैं। उनमें इम्बु नामक हाथियों को

पालतू बनानेवालों से पंडित का परिचय हुआ. तब उन लोगों ने उसके राज्य का समाचार जानकर बताया कि उनके गाँव में उसी राज्य के विजयकेसरी नामक एक क्षत्रिय अपने नौकर के साथ रहते थे. एक बार उन्हें बुखार हुआ तो वे लोग जड़ी बूटी लाने गये, तब एक बाघ उनको उठा ले गया। उनकी चीज़ें यानी कुछ ताड़-पत्रों की पाण्डुलिपियाँ, एक छुरी वगैरह उस पंडित के हाथ सौंप दीं। वह पंडित जब उस जंगल के एक और प्रांत में गया तब वहाँ के कुछ लोगों ने उसे बताया कि विजयकेसरी नामक एक क्षत्रिय कठोरी

प्रजा की समस्याओं को सुलझाना, उनके प्रेम को पाने में जैसे वह कुशल था, वैसे कोई और न था! इसलिए सुंदरपुर शांति और सौभाग्य के लिए मशहूर बना। शक्तिमंत की ताकत का लोहा देश के सभी राजा मानते थे। जरूरत पड़ने पर उसकी सलाह भी लेते थे।

अपने सामंत राजा शक्तिमंत के यश का समाचार सूरसेन हर रोज सुना करता था। पहले यह सोचकर वह उससे ईर्ष्या करने लगा कि उसके यश से शक्तिमंत का यश कहीं बढ़ता जा रहा है। कुछ दिन बीतने पर सम्राट सूरसेन को यह डर लगा कि कहीं न कहीं शक्तिमंत उसके साम्राज्य को खतम कर देगा। सूरसेन ने सोचा कि जल्द से जल्द शक्तिमंत का अंत करना जरूरी है। उसने किसी को सूचित किये बिना, अपनी सेना को तैयार करके, सुंदरपुर पर घेरा डाला और शक्तिमंत पर लड़ाई घोषित की।

शक्तिमंत के पास सूरसेन का जो दूत लड़ाई का संदेश ले आया था, उससे शक्तिमंत ने यों कहला भेजा —

"मैं आपका सामंत हूँ। मुझसे आप लड़ाई क्यों करते हैं? मैं आपकी तरफ से ही, सुंदरपुर पर राज्य करता हूँ। मुझसे कोई भूल हुई हो तो बताइये, मैं उसे सुधार लूँगा।"

यह बात सुनकर सूरसेन विचलित नहीं हुआ। "तुमने अपनी प्रजा को अपने पक्ष में करके मेरे प्रति उनका आदर घटा दिया। तुमको लड़ाई में हराकर तुम्हारे राज्य को अपने हाथ में लिये बिना मैं नहीं रहूँगा।" सूरसेन ने फिर दूत से खबर भेजी।

लड़ाई को रोकने की शक्तिमंत ने कई तरह से कोशिश की, लेकिन कोई

सुरसेन को गद्दी से उतारने तक हमें चैन नहीं चाहिए।" यह फैसला करके, सभी सामंत अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर सुरसेन पर हमला कर बैठे। उसको हरा कर, जंगल में भगा दिया और उसके स्थान पर शक्तिमंत को सम्राट की गद्दी पर बैठा दिया।

शक्तिमंत ने सम्राट बनने से इनकार किया और सबसे मैत्री की संधि करके सबको स्वतंत्र राजा घोषित किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन्, सुरसेन के पतन का कारण ईर्ष्या ही है न? शक्तिमंत ने जब समझाया कि मैं सम्राट के अधीन में रहकर ही राज्य करता हूँ तो सुरसेन संतुष्ट न हुआ और उसके साथ युद्ध करके अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मार ली! यह सोचकर कि शक्तिमंत उसका पद लेगा, डरकर, यह कार्रवाई क्यों की? इन सवालों का जवाब जानकर भी नहीं बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इसपर विक्रमादित्य ने जवाब दिया— "सुरसेन के व्यवहार का कारण केवल ईर्ष्या ही नहीं! जब सुरसेन को यह मालूम हो गया कि शक्तिमंत उससे भी ज़्यादा समर्थ है, तब उसने यह जाना कि शक्तिमंत के द्वारा कभी न कभी उसके पद के लिए खतरा हो सकता है। इस खतरे से बचना है, तो सम्राट को शक्तिमंत से भी ज़्यादा समर्थ शासक बनना है। यह सुरसेन के लिए संभव नहीं है। इसलिए शक्तिमंत का नाश करने के अलावा सम्राट के लिए दूसरा रास्ता नहीं है। उसमें पराजित होना ही उसके पतन का कारण है।"

इस तरह राजा का मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

गोप कब सोता है? दिन-रात भेड़ों का पहरा ही देता रहा, तो चोरी कब की जाए?

भूपति की समझ में नहीं आया कि इसका रहस्य क्या है? एक दिन वह गोप के घर गया और उसकी पत्नी से कहा—"हे माई! तुम्हारी भेड़ों की किसीने चोरी की है।"

"वह लगातार झाड़ी के नीचे लाठी थामे खड़े-खड़े भैंस की नींद सोता है। शायद यह बात चोर को मालूम हो गयी। चोर बड़ा होशियार मालूम होता है।" गोप की पत्नी ने कहा।

उसी रात को भूपति गोप की रेवड़ से चार भेड़ों को चुरा ले गया और चोरों के पास जाकर बोला—"ये गोप की भेड़ें हैं! फिर जाता हूँ। इस बार पटेल नागराज के जूते लेकर ही लौटूंगा।"

पटेल नागराज अक्सर जंगल पार कर शहर में जाता रहता है। वह नागदेवता का भक्त है। ये दोनों बातें जानकर भूपति ने अपनी योजना बनायी।

जंगल से होकर शहर जानेवाले रास्ते में एक ओर सांप की एक बांबी है। भूपति ने उसके चारों तरफ एक बाड़ा बनाया। उस बाड़े के भीतर जाने के लिए एक छोटी-सी राह बनायी। बांबी पर फूल फैलाये। तब से हर रोज वह बांबी पर हल्दी, कुंकुम, चन्दन और फूल डालता। देखने में ऐसा लगता था कि लोग हर रोज वहाँ पूजा करते हैं।

एक हफ्ता बीत गया। पटेल नागराज को शहर जाने का काम पड़ा। जूते पहनकर जंगल के रास्ते से जाते-जाते ज्योंही वह बांबी के पास पहुँचा, त्योंही रुककर, उसने भीतर झांककर देखा। उसे लगा कि कई दिनों से वहाँ नाग की पूजा हो रही है। नागराज नाग का

झोंपड़ी के बाहर एक औरत पत्थरों का चूल्हा बनाकर एक मिट्टी के बर्तन में कांजी बना रही है। सात-आठ बच्चे उस कांजी के इन्तजार में बैठे हैं।

राजकुमार ने उस औरत को देखकर पूछा—"मैंने दिन-भर कुछ खाया नहीं। मेरी भूख मिटाने का कोई उपाय हो तो बताओ।"

"जरा ठहरो, बेटा! हमारे साथ तुम भी कांजी पी सकते हो!" औरत ने कहा।

कांजी के तैयार होते ही उस औरत ने पहले राजकुमार को पेट-भर पिलाया, बाद अपने बच्चों को। बच्चों का पेट न भरा; उस औरत को एक बूंद भी न बची।

"कल सुबह पेट-भर खाओगे बेटा, अब सो जाओ।" उस औरत ने अपने बच्चों को समझाया।

उसकी हालत देख राजकुमार का दिल पिघल उठा। वह उस रात को वहीं बिताकर दूसरे दिन जब जाने लगा तब उसने अपना माला उस बुढ़िया को दे दिया।

उसके बाद वह बड़े आराम से अपने नगर पहुँचा।

राजकुमारी ने उससे मामूली बात की और उसका पूरा परिचय मालूम किया। बातों के सिलसिले में राजकुमारी ने उससे पूछा—"समुद्र में बड़वानल कैसे रह सकती है?"

राजकुमार ने उस झोंपड़ी की गरीबिन की सारी कहानी सुनाते हुए कहा—"गरीबी की पीड़ा जैसे उस औरत के दिल में छिपी है, वैसे ही बड़वानल समुद्र में छिपी रहती है।"

बातचीत के आगे बढ़ने पर राजकुमारी ने फिर पूछा—"कौन दोस्त और दुश्मन बना रहता है?"

राजकुमार को जंगल का अनुभव याद आया। जिस हवा ने उसे जलाने से बुझायी, उसी हवा ने सारे जंगल में आग फैला दी। यह अनुभव राजकुमारी को सुनाकर बोला—"उदाहरण के लिए आग और हवा को लें, तो उनको दोस्त और दुश्मन कहना पड़ेगा।"

बातचीत के थोड़ी और आगे बढ़ने पर राजकुमारी ने फिर पूछा—"पंखों के बिना कौन उड़ सकता है?"

राजकुमार ने हँसते हुए कहा—"इसमें जरा भी संदेह नहीं कि मन बिना पंखों के उड़ सकता है। मैंने जब तुम्हारे बारे में सुना तब मेरा मन उड़कर तुम्हारे पास आया। मुझे मालूम ही न था कि वह कैसे तुम्हारे पास पहुँचा और उसे खोजते बड़ी तकलीफ़ झेलते मैं तुम्हारे पास पहुँचा। मैंने यह चाहकर अपने मन को भुलाया तक नहीं।"

अपने प्रश्नों के उत्तर काशी के राजकुमार के अनुभव से देने के कारण राजकुमारी बहुत खुश हुई और उसे अपना पति बनाया। दोनों का विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ।

"अच्छी बात है। इस दवा को बड़े पैमाने पर तैयार कराने का इंतज़ाम करो। इसके बनाने में जो भी खर्च होगा, दिया जाएगा।" राजा ने कहा।

इसके बाद राजा ने एक और ढिंढोरा पिटवा कर प्रजा को सावधान किया कि अपने राज्य के सभी मूर्ख आदमी वज्रनाभ के यहाँ से अक्ल की दवा खरीद कर सेवन करें, अगर एक साल के बाद कोई बेवकूफ दिखाई दिया, उसका सर कटवा दिया जाएगा।

राजा के शासन से डरकर हजारों आदमियों ने अक्ल की दवा खरीदी। वज्रनाभ की पाँचों अंगुलियाँ घी में थीं। उसने खूब धन कमाया। एक साल बीत गया। राजा ने इस बात का पता लगाने के लिए आदमियों को नियुक्त किया। अब भी देश में कोई मूर्ख आदमी तो नहीं है। उन लोगों ने सारा देश घूमकर राजा के पास पहुँच करके बताया कि अब देश में सब के सब मेधावी और बुद्धिमान हैं।

श्रीकंठ ने वज्रनाभ का खूब सम्मान किया और उसे कालकीय सम्राट के पास भेजा। सम्राट ने वज्रनाभ को अपने दरबार में बुला भेजा और श्रीकंठ का प्रशंसा-पत्र सबको सुनाकर, वज्रनाभ से पूछा—"तुमने बहुत-से मूर्खों को देखा होगा। उनमें से परम मूर्ख कौन था?"

"मुझे यह प्रशंसा-पत्र देनेवाले श्रीकंठ से बढ़कर परम मूर्ख को मैंने कहीं नहीं देखा। मैंने सच्ची बात बतायी। मुझे क्षमा कीजिये।" वज्रनाभ ने कहा।

"तुम सचमुच अक्लमंद हो! मेरे दरबार में तुम एक मंत्री बनकर काम करो।" सम्राट ने कहा।

वज्रनाभ ने सम्राट के दरबार में शामिल होकर जल्द ही अच्छा पद पाया कि वह सब मंत्रियों में होशियार है।

चौथा सूत्र

एक गाँव में एक अमीर के दो बेटे थे।

अमीर ने ज़िन्दगी-भर मेहनत करके बेटों के वास्ते काफ़ी धन कमाया। उसने अपने अंतिम समय में दोनों को पास बुलाकर, उनको एक पत्र देते हुए कहा— "तुम्हारे दादा ने मुझे यह पत्र दिया है। इसमें सुख के साथ ज़िन्दगी काटने के लिए ज़रूरी चार सूत्र हैं। उनमें प्रथम तीन सूत्रों का पालन करोगे तो चौथे सूत्र की ज़रूरत न पड़ेगी। मैंने अपनी ज़िन्दगी ऐसी ही बितायी।" यह कहकर वह मर गया।

पिता के अंतिम संस्कार करने के बाद दोनों भाइयों ने पत्र के सूत्रों को पढ़ा :—

(१) स्वाद के साथ खाना चाहिए। (२) सब भूलकर सोना चाहिए। (३) बिना साथी के घूमना नहीं चाहिए। (४) समय ने साथ न दिया तो गंगा और गोदावरी के बीच नहर खोदनी चाहिए।

बड़े भाई ने इन सूत्रों पर दिल लगाकर विचार किया। लेकिन छोटे ने कहा— "इसमें कोई सीखने की बात क्या है? ये बातें तो सब जानते हैं।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं। इसमें कोई गूढ़ अर्थ नहीं होता तो दादा ने पिता के हाथ यह पत्र नहीं दिया होता। पिता भी बड़ी सावधानी से इस पत्र को छिपाकर हमें नहीं देते।" बड़े भाई ने समझाया।

"पहले के तीनों सूत्र साफ़ मालूम ही होते हैं, आराम से खाना चाहिए, बिना चिंता के सोना चाहिए और दोस्तों के साथ मज़े में घूमना चाहिए। चौथा सूत्र ही थोड़ा मुश्किल मालूम होता है।" छोटे भाई ने कहा।

बड़े भाई ने छोटे को बहुत समझाया— "जल्दबाज़ी न करो, सोच-समझकर काम लो।" लेकिन बड़े की बात पर ध्यान

गौरीशंकर मिश्र

चंदन वृक्ष

उदयपुर के राजा की एक बेटी थी। उसका नाम चंपकगंधी था। राजा उसे बहुत प्यार करता था। वह जो भी चाहती, राजा उसे दे देता। लाड़-प्यार में पलती रही। जब वह विवाह के योग्य हो गयी, तब एक दिन अपनी सहेलियों के साथ वन-भोज में गयी। वन-भोज के लिए मिष्टान्न और तरह-तरह की मिठाइयों के साथ दही-भात भी ले गयी। मिष्टान्न और मिठाइयाँ तो खतम हो गयीं। लेकिन बहुत सारा दही-भात बच रहा। राजकुमारी ने वहीं पर छोटा-सा गड्ढा खोदकर, बच रहे दही-भात को उसमें गाड़ दिया और उस पर मिट्टी डाल दी। इसके बाद चंपकगंधी अपनी सहेलियों के साथ राजमहल को लौट गयी।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन राजकुमारी अपने पिता के साथ सैर करते उसी जगह पहुँची। वहाँ पर एक विचित्र पौधे को उगा हुआ देखा। उसके पत्ते, फूल और फल भी बड़े विचित्र थे। उस पौधे की ओर राजकुमारी को ध्यान से देखते राजा ने पूछा—"यह कैसा पौधा है, बेटी! तुम ध्यान से क्यों देखती हो?"

चंपकगंधी ने अपने पिता को सारी बातें कह सुनायीं। जब वे बातचीत कर रहे थे, तब पास में ही एक पेड़ पर एक जंगली युवक बैठे सारी बातें सुनता रहा। वह चिड़ियाँ पकड़नेवाला था। चिड़ियों को पकड़ने के लिए ही पेड़ पर चढ़ा था। लेकिन राजा और राजकुमारी को उधर आते देख, वह घने पत्तों में छुपकर चुपचाप बैठ गया था।

इसके बाद अपने पिता के साथ घर लौटते हुए राजकुमारी बोली—"पिताजी, जो आदमी इस पेड़ का नाम बतायेगा, मैं

उसीके साथ शादी करना चाहती हूँ। ऐसा ही इंतज़ाम करा दीजिये।"

बेटी की हर इच्छा की पूर्ति करनेवाले राजा ने राजमहल में पहुँचते ही मंत्री को बुलाकर आदेश दिया—"मंत्री महोदय, राजकुमारी के स्वयंवर का सभी देशों में ढिंढोरा पिटवा दीजिये।"

मंत्री ने राजपुरोहित को बुलाकर, उचित समय के भीतर मुहूर्त का निर्णय कर, राजा की इच्छा के अनुसार ढिंढोरा पिटवा दिया। कई राजा, सामंत और वीर स्वयंवर में आये। राजा उन सबको नगर के बाहर ले जाकर, वन के उस

पौधे को दिखाते हुए बोला—"इस पौधे का सही नाम जो बतावेगा, उसके साथ मेरी पुत्री चंपकगंधी का विवाह करूँगा।"

उनमें से एक भी उस पौधे का नाम न बता सका। कुछ लोगों ने ऐसे नाम भी बताये जिन पेड़ों को कभी देखा तक न था। लेकिन राजा ने नहीं माना। आखिर यह बात साफ़ हो गयी कि कोई भी उस पौधे का नाम न बता सका। उस वक्त जंगली युवक ने आगे बढ़कर कहा—"मैं उस पौधे का नाम बता सकता हूँ।" उस दिन भी वह जंगल में चिड़िया पकड़ने आया था और वहाँ पर भीड़ को देख ठहर गया था।

राजा ने उससे पूछा—"तो बताओ? उस पौधे का नाम क्या है?"

"दही-भात का पौधा है।" जंगली युवक ने कहा।

राजा ने मान लिया कि उसका कहना सच है। देश-देश से आये हुए राजाओं के सर शर्म से झुक गये। वे सब उसी समय अपने अपने देश लौट गये।

राजा के निर्णय का फल उसको अपमानजनक मालूम हुआ। यदि उसको अपनी इज्जत रखनी है तो अपनी बेटी की

शादी जंगली युवक से करनी होगी। लेकिन वह शादी राजा खुद अपने हाथों से कैसे कर सकेगा! देश-देश के राजा भी आये हुए थे। इसलिए राजा ने अपनी बेटी को जंगली युवक के हाथ सौंपकर कहा—"राजकुमारी को अपनी बस्ती में ले जाकर वहीं शादी कर लो।"

चंपकगंधी को अपनी करनी की अच्छी सज़ा मिली। उसको यह समझते देर न लगी कि पिता ने लाड़-प्यार से पाल-पोसकर और उसकी हर इच्छा की पूर्ति की, इसका नतीजा यह हुआ कि उसे एक जंगली युवक की पत्नी बनने की नौबत आयी। यह सोचकर वह उस जंगली युवक के साथ रवाना हुई। वह युवक राजकुमारी को जंगल के रास्ते से बहुत दूर ले गया और एक चन्दन वृक्ष के नीचे बिठाकर बोला—"मेरी बस्ती यहाँ से नज़दीक में है। तुम यहीं बैठो। मैं अपने सगे-संबंधियों को गाजे-बाजे के साथ ले आता हूँ।" यह कहकर, वह अपनी बस्ती की ओर तेज़ी से चला गया।

चंपकगंधी उस चन्दन के पेड़ के नीचे बैठकर, अकेली, फूट-फूटकर रोने लगी। चंदन के पेड़ से निकलकर एक यक्षिणी ने

पूछा—"तुम कौन हो, बेटी! क्यों इस तरह अकेली बैठकर रो रही हो?"

चंपकगंधी ने सारी कहानी कह सुनायी।

"तब तो उस जंगली युवक से शादी करने की तुम्हारी इच्छा नहीं है?" यक्षिणी ने पूछा।

"रत्ती-भर भी इच्छा नहीं है।" चंपकगंधी ने कहा।

"अच्छी बात है! तब तो तुम इस पेड़ में आ जाओ। मैं इस पेड़ में बहुत दिनों से रहती हूँ। इसमें सुख से रहने के लिए सारे इंतज़ाम कर चुकी हूँ। चाहे तो मैं दूसरा पेड़ ढूँढ लूँगी।" यह

कहकर यक्षिणी चंपकगंधी को पेड़ के भीतर ले गयी और सारे इंतज़ाम उसे दिखाकर, वह दूसरा पेड़ ढूँढ़ने चली गयी।

इस बीच जंगली युवक ने बस्ती के अपने रिश्तेदारों से कहा कि वह राजकुमारी का पति बनने जा रहा है। पहले उसकी बात पर किसीने यकीन नहीं किया। सारी कहानी सुनने के बाद उनको विश्वास करना पड़ा। तुरंत गाजे-बाजे, सिंगी, शंख वगैरह बाजों के साथ, बस्ती के सभी लोग बड़े ठाठ से उस युवक को लेकर चन्दन वृक्ष के पास पहुँचे।

लेकिन वहाँ पर राजकुमारी न थी। चारों ओर सबने सारा जंगल छान डाला। राजकुमारी के चिह्न तक दिखाई न पड़े। जंगली बस्ती के लोग उस जवान को डांट-डपट, गालियाँ दे, वापस चले गये।

चंपकगंधी उसी चन्दन वृक्ष में रहती थी। जब बाहर कोई दिखाई न देता तब पेड़ से निकलकर जंगल में कंद मूल खाती और घूमती। अगर कभी यक्षिणी आती तो उससे बातचीत करते वह अपना समय काटती।

उस जंगल के उस पार एक और राज्य था। उस राजा के एक पुत्र था। वह शादी के योग्य बना था। कन्या की खोज भी कर रहे थे।

राजकुमार जंगल और वनों से बहुत प्रेम रखता था। उसने अपनी राजधानी में भी एकान्त जमीन में एक बड़ा बगीचा लगवाया और उसमें सब तरह के पेड़-पौधों को लगवाया। उसमें केवल चन्दन वृक्ष का लगाना बाकी रह गया था। इस काम के वास्ते उसने अपने सिपाहियों को जंगल में भेजा। उन लोगों ने सारा जंगल घूमकर, आखिर चंपकगंधी के पेड़ को ढूंढ निकाला। तुरंत उन सिपाहियों ने उस पेड़ को जड़

सहित उखाड़कर राजकुमार के बगीचे में रोप दिया ।

दूसरे दिन चंपकगंधी रोज की भांति पेड़ से बाहर निकली और चारों तरफ़ देखा । उसे जंगल दिखाई न पड़ा, बल्कि उसकी जगह एक सुन्दर बगीचा दिखाई दिया । थोड़ी दूर पर एक सुन्दर तालाब, उसमें कमल के फूल भी थे । उसके नज़दीक फलों के पेड़ भी थे ।

चंपकगंधी ने तालाब में स्नान किया, फल तोड़कर खाया । उसी वक़्त उधर से राजकुमार निकला । दोनों एक दूसरे को देख चकित हो गये । चंपकगंधी ने ऐसे सुंदर युवक को कभी नहीं देखा था । राजकुमार की समझ में भी न आया कि ऐसी सुंदर नारी उसके बगीचे में कैसे आयी ?

"तुम कौन हो ? मेरे बगीचे में कैसे आयी हो ?" राजकुमार ने उस युवती से पूछा । सच्ची कहानी सुनाने में उसे लज्जा हुई । बेवकूफ़ी से शादी के लिए एक प्रतिज्ञा की थी । उसका नतीजा यह हुआ कि जंगली युवक के साथ शादी करने की नौबत आयी और पक्षियों की कृपा से उस अपमान से बच गयी । यह सब सोचने से ही उसे शर्म आने लगी ।

इसलिए उस युवती ने अपना परिचय छिपाते जवाब दिया—"मेरा नाम चंपकगंधी है । मैं एक चन्दन के पेड़ में निवास करती हूँ । कल तक वह पेड़ जंगल में था । आज देखती हूँ तो इस उद्यानवन में है ।"

राजकुमार ने उसे देखते ही प्यार किया । उसने मन में सोचा कि वह ज़रूर कोई न कोई राजकुमारी होगी । उसे घर ले जाकर, माता-पिता की अनुमति से शादी करेगा । लेकिन उस युवती ने अपने को राजकुमारी नहीं बताया । किसी पेड़ में निवास करनेवाली के साथ शादी करना चाहूँ तो बड़े लोग मानेंगे नहीं । फिर भी

चंपकगंधी के साथ शादी करने की इच्छा जबर्दस्त थी। इसलिए उसने निश्चय किया कि उसके साथ वह धूमधाम से ही शादी करेगा।

राजकुमारी ने उस युवती से पूछा—"क्या तुम्हारी शादी हो गयी?"

उस युवती ने कहा—"नहीं।"

"मुझसे शादी करोगी?" राजकुमार ने फिर पूछा।

चंपकगंधी ने बड़ी खुशी से मान लिया।

"लेकिन मैं तुमको अपने घर में नहीं ले जा सकता। फ़िलहाल तुमको इसी पेड़ में रहना होगा।" राजकुमार ने समझाया।

चंपकगंधी ने उसका विरोध न किया।

राजकुमार ने घर पहुँचकर अपने माता-पिता से कहा—"आप तो मेरी शादी करना चाहते हैं न? हमारे बगीचे के चन्दन वृक्ष के साथ मेरी शादी कीजिये। मैं और किसी के साथ शादी नहीं करूँगा।"

राजा और रानी ने सोचा कि शायद राजकुमार पागल तो नहीं हो गया है। उन लोगों ने राजकुमार को समझाया भी—एक से बढ़कर एक सुंदर राजकुमारियाँ हैं, उनमें एक को चुनकर शादी कर लो। लेकिन राजकुमार ने साफ़ बता दिया कि मैं उस चन्दन वृक्ष को छोड़ किसी के साथ शादी करूँगा नहीं।

राजा ने मंत्री से सलाह-मशविरा किया। "राजकुमार की इच्छा देखने में पागल की तरह मालूम होती है। लेकिन ऐसी इच्छा के पीछे जरूर कोई न कोई जबर्दस्त कारण होगा। वह समय पाकर प्रकट होगा। इसलिए उसकी इच्छा के अनुसार ही करेंगे।" मंत्री ने सलाह दी।

राजा ने पुरोहित को बुलाकर लग्न ठीक कराया। किसी को निमंत्रण दिये बिना शास्त्र के अनुसार मंत्रोच्चारण के साथ राजकुमार का चन्दन वृक्ष से विवाह

करवाया। इसके बाद राजकुमार ने चन्दन वृक्ष के चारों तरफ सुन्दर भवन बनवाया और बगीचे में किसी के आने से रोक लगायी। वह उस भवन में राजकुमारी के साथ सुख से गृहस्थी चलाने लगा।

एक साल के भीतर चंपकगंधी गर्भवती हो गयी और उसने एक बच्चे को जन्म दिया। राजकुमार ने अपने पिता के पास जाकर कहा—"मेरे एक पुत्र हुआ है। इसके नामकरण का उत्सव मनाइये। मेरी शादी की तरह इसे चुपचाप से मनाने की जरूरत नहीं। चारों तरफ के राजाओं को बुलवाकर धूम-धाम से मनाइये।"

राजा तो पहले चकित हो गया। फिर सब राजाओं को निमंत्रण भेजा। उसी दिन राजकुमार अपनी पत्नी और पुत्र को लेकर राजमहल में आया।

राजकुमार की सुन्दर पत्नी को देख सब आश्चर्य में आ गये।

"यह कौन है? कैसे यह तुम्हारी पत्नी बनी?" राजा और रानी, दोनों ने पूछा।

"मैंने जिस वृक्ष से शादी की, उसीमें यह रहती है। इससे बढ़कर मैं कुछ नहीं जानता।" राजकुमार ने जवाब दिया।

लेकिन सचाई जल्दी ही प्रकट हो गयी। नामकरण के उत्सव में जो जो राजा आये थे, उनमें चंपकगंधी के पिता भी थे। उन्होंने अपनी पुत्री को पहचानकर पूछा—"बेटी, तुम यहाँ हो? मैंने सोचा, तुम जंगलों में भटक रही हो?"

चंपकगंधी ने सबके सामने आदि से अंत तक अपनी कहानी अपने पति और पिता को सुनायी। उनकी बहू राजकुमारी है, यह जानकर उसके सास-ससुर बहुत खुश हुए। नामकरण का उत्सव बड़े ठाठ से संपन्न हुआ।

इसके बाद राजकुमारी पेड़ में रहना छोड़कर राजमहल में रहते अपने दिन सुख से बिताने लगी।

जाय, तुम्हें कुछ नहीं सूझता?" दाढ़ी पर हाथ फेरते मुनि ने पूछा।

उस मुनि की दिव्य दृष्टि पर चकित हो चन्द्रदेव ने कहा—"हाँ, मुनिवर! आप ठीक कहते हैं।"

"तुम्हारे पिता के दिये हुए धन से अनाज खरीदकर, उसको समुद्र में फिंकवा दो! उसके बाद जो होगा, तुम खुद देखोगे।" यह सलाह देकर मुनि अपने रास्ते चला गया।

चन्द्रदेव ने दूसरे दिन सुबह अपना सारा धन लगाकर अनाज खरीदा और उसको समुद्र पर फेंकवा दिया।

इतने में, घर से लौटकर रविदेव ने छोटे भाई की करतूत जानकर डाँटा—"बेवकूफ कहीं का! पिताजी ने जो धन व्यापार में लगाने को दिया उसे तुमने समुद्र में फेंक दिया। यह बात पिताजी को मालूम हो जाएगी तो तुमको फाँसी के तख्ते पर लटकवा देंगे।"

चन्द्रदेव डर के मारे काँप गया।

इतने में जहाज के रवाना होते देख रविदेव अपने माल को लेकर जहाज पर सवार हुआ और विदेशों में चला गया।

चन्द्रदेव घर लौटने की हिम्मत न कर सका। वह उस रात को

समुद्र के किनारे पर परेशान हो इधर-उधर भटकता रहा ।

उस वक्त एक बड़ी विचित्र बात हो गयी । समुद्र की लहरों पर तैरते कुछ चीजें किनारे की तरफ़ आने लगीं । लहरें उन चीजों को किनारे लगाकर फिर लौट जाती थीं । चन्द्रदेव ने उनको हाथ में लेकर ध्यान से देखा तो वे सीपियाँ थीं । हज़ारों की तादाद में सीपियाँ किनारे की तरफ़ आ रही थीं । रात-भर चन्द्रदेव उन सीपियों को बटोर-बटोरकर अपने कमरे में पहुँचाने लगा ।

दूसरे दिन उनमें से अच्छे-अच्छे मोती निकलवाकर वहीं पर बेचता रहा । बेचने से उसे इतने रुपये मिले कि आखिर हिसाब देखा तो पिता के दिये रुपयों से भी दूने ज्यादा थे । चन्द्रदेव ने सोचा कि समुद्री देव ने उसे भेंट में ये रुपये दिये हैं । उन रुपयों को लेकर वह घर लौटा ।

समुद्र पर जब रविदेव जा रहा था, तब उसका जहाज डूब गया । उसका सारा माल समुद्र के पेट में चला गया । वह जान बचाकर, कई बीमारियों के साथ, कुछ महीनों में घर लौटा । देखने में वह बहुत कमज़ोर था । उसे देख सबको दया आयी ।

घर लौटते ही रविदेव ने अपने छोटे भैया से गले लगाते हुए कहा—"भैया, मैंने तुम्हारे साथ दगा किया । इसके लिए मुझे अच्छा दण्ड मिला । मुझे माफ़ कर दो ।" यह कहते रविदेव रो पड़ा ।

चन्द्रदेव ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा—"तुमने मुझे दगा कैसे दिया ?"

"मैं घर जाने की बात झूठ बोलकर, मुनि का वेश धरकर तुम्हारे पास आया और तुम्हारा सारा धन अनाज के रूप में समुद्र में गिरवा दिया ।" रविदेव ने कहा ।

नया पिशाच

कुसुमपुर पर मित्रवर्मा नामक एक समर्थ राजा शासन करता था। उसके शासन में राज्य सब तरह से सुखी और समृद्ध था। राजा रात के समय अपना वेश बदलकर शहर में घूमते जनता के सुख-दुखों का पता लगाता था।

एक दिन जब घूमते-घूमते राजा एक गरीब की झोंपड़ी से होकर गुजरते समय तब उसे भीतर से कोई बातचीत सुनाई पड़ी। राजा ने ठहरकर ये बातें सुनीं।

पत्नी अपने पति से कह रही थी—"इस गरीबी का बोझा कितने दिन ढोयेंगे। सुना है कि हमारे राजा बड़े दयालु हैं। जाकर उनके दर्शन करो और थोड़ा श्मशान भी दें तो खुशी से मान जाओ।"

ये बातें सुनकर राजा आगे बढ़ा।

दूसरे दिन उस गरीब आदमी ने राजा के दर्शन कर पूछा—"महाराज, गुजारा नहीं होता है। मरे जा रहे हैं। कम से कम थोड़ा श्मशान दिलाने की कृपा कीजिये।"

राजा ने उस गरीब को थोड़ा श्मशान दिलाया। गरीब आदमी ने घर लौटकर अपनी पत्नी से कहा—"राजा से मैंने श्मशान माँगा। उन्होंने बड़ी खुशी से दिया। अब क्या करना है, हमें।"

"करेंगे क्या? वहाँ पर पेड़ हों तो काट डालो, लकड़ी बेचकर जो कुछ मिलेगा, उससे खायेंगे। उसके बाद उस जमीन को जोत-बोकर फसल पैदा कर खा सकते हैं।"

गरीब आदमी कुल्हाड़ी कंधे पर रखकर श्मशान में गया। वहाँ पर एक बड़ा इमली का पेड़ था। ज्यों ही वह उस पेड़ को काटने लगा, त्यों ही सैकड़ों पिशाच पेड़ से उतर आये और उसके चारों तरफ़ फैलकर बोले—"भैया! देखो, इस पेड़ को

न काटो। इसपर हम सब निवास करते हैं। हमारे लिए यही एक पेड़ घर बना हुआ है। तुम्हारी मेहरबानी होगी!"

एक साथ कई सियारों को देख पहले गरीब आदमी घबरा गया, लेकिन उनके प्रार्थना करते देख, हिम्मत बटोरकर बोला—"पेड़ न काटूँ तो मेरा गुज़ारा कैसे होगा? इसे काटना होगा। इसके बाद ज़मीन जोत-बोकर, फ़सल होने पर हमें पेट भरना है। समझे! मुझे बहकाओ मत।" यह कहते गरीब ने फिर कुल्हाड़ी उठायी।

"जल्दबाज़ी न करो! हमारी बात भी ज़रा सुनो तो! तुमको मेहनत करने की ज़रूरत नहीं। जो कुछ अनाज चाहिए, हम जमा करके, तुम्हें भेंट में देंगे। ठीक है न?" सियारों ने एक स्वर में कहा।

"अच्छी बात है! ऐसा ही करो! दो महीनों के अन्दर अनाज मेरे घर पहुँचा दो। समझे?" यह कहकर गरीब आदमी घर लौटा और सारी बातें पत्नी को सुनायी।

पत्नी भी ये बातें सुनकर बहुत खुश हो गयी। तब से सियार रोज़ अनाज इकट्ठा करने लगे।

उन दिनों में एक नया सियार उस इमली के पेड़ पर आया। बाकी सियारों को अनाज जमा करते देख उसने पूछा—

"यह सब तुम लोग क्या करते हो? हमें अनाज की ज़रूरत ही क्या है?"

पिशाचों ने उसे पेड़ की कहानी बतायी।

नये पिशाच ने आँखें लाल-पीली करके कहा—"तुम्हें आदमी से डरना क्यों? मैं खुद जाकर उसका काम तमाम किये देता हूँ।" यह कहकर वह नया पिशाच ग़रीब की झोंपड़ी की ओर चला।

ग़रीब की झोंपड़ी पर एक सेम की बेल फैली थी। हर रात एक भैंस आकर उसे चर जाती थी। उसे पीटने के विचार से एक लाठी लेकर, ग़रीब आदमी आड़ में छुपे बैठा था। इतने में वह नया पिशाच भीतर घुस आया। ग़रीब ने आहट पाकर सोचा कि भैंस आ गयी है! झट लाठी लेकर "मर जा" "मर जा" कहते उसपर लाठी दे मारी।

नया पिशाच ज़ोर से चिल्ला उठा—"बाप रे! जान से मार डाला।" ग़रीब के यह समझते देर न लगी कि यह भैंस नहीं, बल्कि पिशाच है! उसने गुस्से में आकर पूछा—"क्यों आये हो?"

"कोई ख़ास बात नहीं है! मुझे इसलिए भेजा है कि मैं आपसे यह पता लगाऊँ, आप धान चाहते हैं या चावल?" नये पिशाच ने काँपते हुए जवाब दिया।

"अच्छा! यह बात है! यह लो, चावल ही चाहिए!" ग़रीब ने कहा।

नये पिशाच ने पेड़ के पास जाकर दूसरे पिशाचों से कहा—"उनको धान नहीं चाहिए, वे चावल ही चाहते हैं।"

"ओह! तुम यह लेकर लौट आये हो? धान जमा करने में ही हम लोग परेशान हैं! उसे कूटकर चावल बनाने का काम भी हमारे सर पर डाल तुमने हमारी जान आफ़त में डाल दी है।" यह कहते पुराने पिशाचों ने नये पिशाच को ख़ूब गालियाँ सुनायीं।

"भैया, चवन्नी दूकानदार को दे दो ।" सोम ने अपने छोटे भाई से कहा ।

"कैसी चवन्नी ?" राम ने पूछा ।

"मैंने तुमसे कहा था न, उठाने को । वही चवन्नी !" सोम ने याद दिलायी ।

सोम चुप हो गया ।

दूकानदार को मालूम हो गया कि उनके पास पैसे नहीं हैं । उसने दोनों को एक खंभे से रस्सियों से बंधवा दिया । वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों से उनके बारे में कह रहा था कि इतने में राजा के सेवक वहाँ पहुँचे । सोम और राम की कहानी सुनकर, दूकानदार को चवन्नी दे दी और उन दोनों को राजा के पास ले गये ।

राजा ने आलसी लोगों को पकड़ लाने सेवकों को सभी गाँवों में भेज दिया था । राजा के मन में एक दिन एक बड़ा मजेदार विचार आया—अपने दरबार में आलसी नहीं हैं । दरबारी आलसी होने चाहिए । इस विचार के आते ही देश-भर के सभी आलसियों को पकड़कर लाने का आदेश दिया था ।

गाँव-गाँव से लाये गये सब आलसियों को राज-दरबार में हाज़िर किया गया । इस तरह बहुत-से लोग जमा हो गये थे ।

राजा ने उन लोगों से पूछा—"तुममें जो जो आलसी हैं, वे सब हाथ उठाओ ।"

कुछ लोगों ने पूरे हाथ उठाये । कुछ लोगों ने आधे हाथ उठाये । लेकिन सोम और राम ने बिलकुल हाथ नहीं उठाये ।

"तुम दोनों क्या आलसी नहीं हो? हाथ क्यों नहीं उठाते ?" राजा ने पूछा ।

"इतनी मेहनत कौन उठायेगा । मालूम ही होता है न ?" सोम ने जवाब दिया ।

राजा ने उनके जवाब से खुश हो निर्णय किया कि ये ही सच्चे आलसी हैं ।

"महाराज, आपने इन दोनों को दरबारी आलसी निर्णय किया ?" मंत्री ने पूछा ।

"नहीं, नहीं! इनकी और दो परीक्षाएँ लेनी हैं!" राजा ने कहा।

राज सेवक उन दोनों को एक कमरे में ले गये। वहाँ पर तरह-तरह के मिष्टान्न और मिठाइयाँ थालियों में परोसी गयी थीं। भूख से बेदम हुए वे दोनों उन पदार्थों को देख ललक पड़े। उनकी जान में जान आ गयी। लेकिन खाने के लिए पत्तल न थे।

"तुम जाकर दो पत्तल ले आओ, भैया!" श्याम ने राम से कहा।

आधा घंटा बीत गया। वे दोनों बेजान पत्थर की भाँति वहीं बैठे रहे। इतने में उस कमरे में एक कुत्ता आया। वह सब खाना खा गया। लेकिन उसे भगाने की भी दोनों ने कोशिश तक न की।

यह सब गुप्तरूप से देखनेवाला राजा बहुत खुश हुआ और बोला—"ये लोग दूसरी परीक्षा में भी पास हो गये। अब तीसरी परीक्षा लेंगे।" राजा ने कहा।

राज सेवकों ने आकर पूछा—"क्या तुम्हारा भोजन हो गया?" उन आलसियों ने बताया, अभी नहीं हुआ है। सेवकों ने उनको एक झोंपड़ी में ले जाकर, खाने का इंतज़ाम किया।

इतने में झोंपड़ी में आग लग गयी। दोनों खाना खाकर आराम करते लेट गये। उन दोनों ने देखा—झोंपड़ी जल रही है।

"अरे, झोंपड़ी जलती मालूम होती है।" एक ने कहा।

"अरे, अभी आग बहुत दूर है। हमारे पास तक आने दो, फिर देखा जायगा!" दूसरे ने कहा।

"इस बीच में राजा के सेवक बुझा देंगे।" पहले ने कहा। दोनों हिले-डुले नहीं, लेट रहे।

राजा को अपार आनंद हुआ। सेवकों को भेजकर उनको उठवा लाया। उसी दिन उन दोनों को राजा ने अपने दरबारी आलसी नियुक्त किया।

कृष्णावतार

यादवों ने जरासंध आदि राजाओं को हराया और विजय की खुशी में जयनाद करते, दुंदुभियाँ बजाते, बलराम और सात्यकी को आगे कर द्वारका को लौट चले।

कृष्ण जब रुक्मिणी को साथ लेकर चले गये तब धूर्तपर्व रुक्मि भी अपने रथ पर बिठाकर निकले। लेकिन रुक्मि ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी बहन रुक्मिणी को साथ लाये बिना कुंडिनपुर में प्रवेश नहीं करेगा। वह प्रतिज्ञा भंग हो गयी थी, इसलिए वह भोजकटक नामक नगर बनाकर, उसमें रहने लगा।

जरासंध ज्योंही होश में आया त्योंही अपनी तितर-बितर हुई सेना को इकट्ठी कर, अपमानित शिशुपाल को साथ ले, अपने देश को चला गया।

यादव-वंशी वृद्धों ने कृष्ण के विवाह का मुहूर्त निश्चय किया और बन्धु-रिश्तेदार और अन्य राजाओं को निमंत्रण-पत्र भेजे। राजधानी में विवाह की अच्छी सजावट हुई। रत्न-खचित दीवारों को कुंकुम-धूल से साफ करके इस तरह सजाया कि वह चकाचौंध करने लगी। सोने के खंभों पर बंधे कपड़ों को हटाया, जिससे उन पर की गयी नक्काशी और कारीगरी सब को साफ दिखाई देने लगी। गच की हुई फर्श पर कस्तूरी का जल छिड़का गया और उसे खूब मल-मल कर चमका दिया। तरह-तरह के मोतियों की रंगोलियाँ की

१४. शंबरासुर का वध

गयी। सब जगह सुपारी और केलों के पौधों को खंभों से बाँधा गया। कोमल पीपल और आम के पत्तों के तोरण बाँधे गये। पीतांबर से बनी ध्वजाएँ फहराती गयीं।
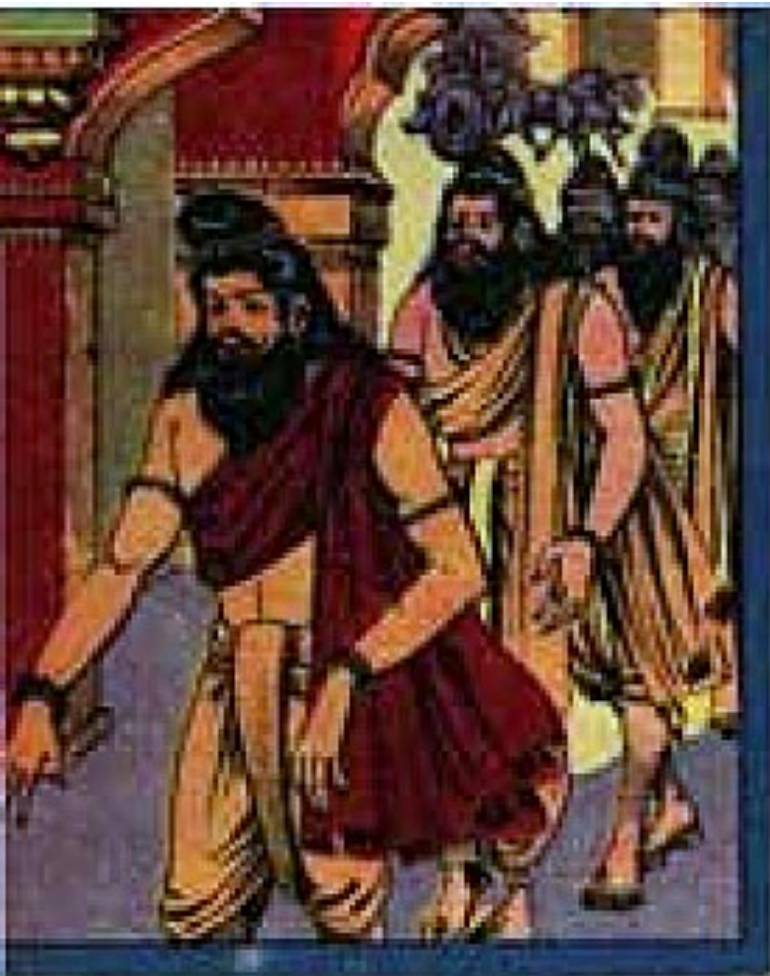
कृष्ण की शादी में उनके रिश्तेदार और कई राजा-महाराजा, बड़े ठाठ-बाट से रथों, हाथियों और घोड़ों को साथ लेकर बड़े प्रेम-भाव से आये। कृष्ण के दर्शन करके अपनी तपस्या को सफल बनाने की इच्छा से कई ऋषि-मुनि पधारे। इनके अलावा चारों वर्णों के प्रमुख व्यक्ति कई देशों से इस शादी में भाग लेने आये। भीष्मकजी ने सभी लोगों का आदर-सत्कार किया और उनके ठहरने का अच्छा इन्तज़ाम किया।

शादी का दिन आया। ब्राह्मणों का वेद-पाठ, बंदीजनों द्वारा राजाओं की तारीफें, नारियों के चलने से होनेवाली आभूषणों की ध्वनि, हाथियों के चिंघाड़, घोड़ों की हिन-हिनाहट, शादी के गाजे-बाजे, आकाश में देवताओं की दुंदुभियाँ—इन सब ने मिलकर बड़ा कोलाहल पैदा किया।

सोने के चार खंभों से विवाह-मंडप सजाया गया। माणिक और फूलों से उसका अलंकार किया गया। वहाँ तरह-तरह की रंगोलियाँ की गयीं। उस मंडप में रत्न-खचित वेदी पर कृष्ण आसीन हैं। उनके चारों तरफ़ उग्रसेन, वसुदेव, बलराम, यदु-वंशी वृद्ध, ऋषि-मुनि बैठे हैं। पुरोहित अग्निमुखी हो मंत्रोच्चारण कर रहे हैं।

मुहूर्त के समय, सुकुमारता, सुंदरता, सुशीलता और सौभाग्य की प्रतिकृति दीखनेवाली रुक्मिणी का कृष्ण ने पाणिग्रहण किया। उन पर सौभाग्यवतियों ने अक्षत और आकाश से देवता-नारियों ने पुष्प एक साथ छिड़क दिये। ब्राह्मणों ने आशीर्वाद

दिये । कृष्ण ने अपने माता-पिता और बड़ों को प्रणाम कर उनके आशीर्वाद पाये । इसके बाद उन्होंने अनगिनत ब्राह्मणों को आठ हज़ार रथ, ग्यारह हज़ार पाँच सौ हाथी, कई घोड़े, गायें आदि दान किया । गहने, सोना, चाँदी वगैरह दास-दासियों को इनाम दिये । सूत, मागधी, नर्तक, बंदीजन आदि को असंख्य पुरस्कार दिये । फिर सबको मधुर भोजन कराकर उन्हें संतुष्ट किया । शादी के दिन मज़े में कट गये । शादी में आये हुए लोग कृष्ण को उपहार देकर, उनसे पुरस्कार पाकर, चले गये ।

कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ पारिवारिक-सुख पाते हुए, मित्रविन्दा, जांबवती, सत्यभामा, कालिन्दी, सुदंता से भी शादी की ।

कुछ ही दिनों में कृष्ण की पहली पत्नी रुक्मिणी गर्भवती हुई । कृष्ण ने अपने ओहदे के अनुसार रुक्मिणी के पुंसवन-सीमंत आदि धार्मिक संस्कार संपन्न किया । रुक्मिणी ने समय पर एक पुत्र का जन्म दिया । यह शिशु और कोई न था, जो पुराने समय में शिवजी के तीसरे नेत्र की ज्वाला में भस्म हो गया था, वही मन्मथ था । उसका नामकरण प्रद्युम्न किया गया ।

शंबर् नामक राक्षस को पहिले ही मालूम हो गया था कि रुक्मिणी के गर्भ से पैदा होनेवाले व्यक्ति के द्वारा उसकी मौत होगी ; इसलिए आधी रात के समय रुक्मिणी की बगल में लेटे सात दिन उम्रवाले शिशु को शंबर चुरा ले गया और उसे समुद्र में फेंक दिया । उस शिशु को एक बड़ी मछली ने निगल लिया । उस मछली को एक मछुए ने अपने जाल में फंसाया और खुश होकर उसे अपने देश की रानी मायावती को

भेंट किया। वह मछुआ इक्षुमती नामक शहर में रहता था। उस शहर पर शंबर राज्य करता था। मायावती शंबर की पत्नी थी।

मायावती ने उस मछली को खूब काटा और उसमें एक सुंदर बालक को देख वह बहुत खुश हुई। उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। संतान न होने की वजह से शंबर भी उस बच्चे को देख फूला न समाता था।

मायावती के पोषण में पाले प्रद्युम्न ने राक्षसों के सभी माया-जाल सीख लिये। सब तरह की विद्याएँ सीख कर वह बड़ा हो गया। वह बढ़ते-बढ़ते इस तरह सुंदर और आकर्षक बना कि बचपन से पालनेवाली मायावती ही उस पर मोहित हुई और उसने अपनी इच्छा प्रद्युम्न के सामने प्रकट की।

प्रद्युम्न बड़ा बुद्धिमान था। इसलिए उसने मायावती से कहा—"तुम माता हो, मैं पुत्र हूँ। मेरे प्रति तुम्हारे मन में यह भाव कैसे पैदा हो गया? इसका कोई कारण हो, तो बताओ!"

इस पर मायावती ने यों जवाब दिया—"तुम्हारे पिता यादव वंश के उद्धारक कृष्ण हैं। तुम्हारी माता रुक्मिणी देवी हैं।

बचपन में ही शंबर ने तुमको समुद्र में फेंक दिया। भाग्यवश तुम यहाँ पहुँचे। मैंने आज तक तुम्हारी रक्षा की। तुम्हारे वास्ते तुम्हारी माँ आज बहुत दुखी है। जल्दी तुम उनसे मिलो। मैंने तुम्हारी सुंदरता पर मुग्ध हो, तुमसे प्रेम किया। मेरा तिरस्कार न करो। शंबर को मैंने माया-मोह में डाल दिया और उसकी पत्नी के रूप में अभिनय करती आ रही हूँ। वह तुम्हारा दुश्मन है। उसे मार डालो।"

मायावती की बातें सुनकर प्रद्युम्न ने शंबर को युद्ध के लिए ललकारा। दोनों के बीच बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में प्रद्युम्न ने सात मायाओं का प्रयोग कर विफल हो आठवीं माया से शंबर को मार डाला।

इसके बाद मायावती को साथ लेकर माया के प्रभाव से आकाश-पथ पर यात्रा करते कृष्ण के अंतःपुर में उतरा। अचानक अपने बीच उतरे प्रद्युम्न को देख कृष्ण की सभी पत्नियाँ डर गयीं। उसके सौंदर्य को देख खुश भी हुईं। रुक्मिणी ने उस युवक को देख यह सोचा कि उसका पुत्र जिंदा हो तो आज तक इतना बड़ा हुआ होता। देखते-देखते उस युवक में कृष्ण के लक्षण पाकर, उसे यह भी शंका हुई कि उसका पुत्र ही जिंदा रहकर यहाँ आ गया तो नहीं है! कृष्ण भी उसे ध्यान से देखते मुग्ध होने लगे।

इस बीच नारद ने वहाँ पहुँचकर कृष्ण को प्रद्युम्न की सारी कथा सुनायी। सब बातें साफ़ साफ़ प्रकट हो गयीं—प्रद्युम्न रुक्मिणी का ही पुत्र है। मायावती भी पिछले जन्म में मन्मथ की पत्नी रती देवी थी। फिर से वह उसकी पत्नी बनी। मन्मथ के भस्म होने के बाद वह शंबर के हाथ में पड़ी और मायारूप धारण

शंबर के राजभवन में उसने अपने पातिव्रत्य की रक्षा करती रही।

अपने पुत्र को फिर से पाकर रुक्मिणी बहुत खुश हुई। कृष्ण की सभी पत्नियों ने भी आनंदित हो अंतःपुर में उत्सव मनाया।

रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को ही नहीं, बल्कि और नौ पुत्रों का भी जन्म दिया और अंत में एक पुत्री को भी। प्रद्युम्न के बाद रुक्मिणी के नौ पुत्रों के नाम यों हैं—चारुदेष्ण, सुदेष्ण, सुषेण, चारुगुप्त, चारुवाहन, चारुविन्द, चारुभद्र, चारुगर्भ, चारु और अंतिम लड़की का नाम चारुमती है। अन्य पत्नियों से कृष्ण के भानु, भानुविंद, सत्राजित, दीप्तिमंत, वृक असंख्य पुत्र और मित्रवती आदि कई पुत्रियाँ भी पैदा हुईं।

रुक्मिणी के गर्भ से जिस महीने प्रद्युम्न का जन्म हुआ, उसी महीने में जांबवती ने साम्ब का जन्म दिया। उसे बचपन में ही बलराम ने अपने आश्रय में लेकर, अपने पुत्र की तरह पाला-पोसा और सभी युद्ध-विद्याएँ सिखायीं। रेवती के गर्भ से बलराम के निशठ और उल्मुक नामक पुत्र पैदा हुए। इस तरह बलराम-कृष्ण बड़ी संतान के पिता हो, सुख से दिन काटते थे।
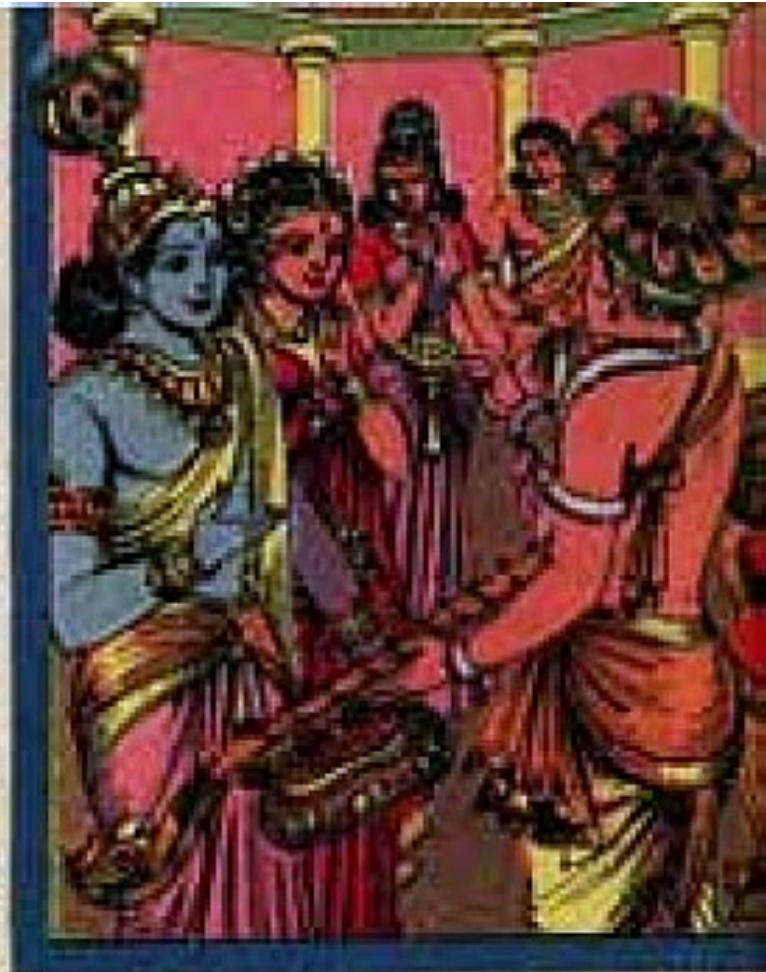
विदर्भ देश में रुक्मिणी के भाई रुक्मि के शुभांगी नामक एक पुत्री थी। वह शादी के योग्य हो गयी थी। वर की खोज में रुक्मि ने एक स्वयंवर का इंतजाम किया और पृथ्वी पर के सभी राजाओं को निमंत्रण-पत्र भेजे। उसमें दूर दूर देशों के कई राजा भाग लेने आये। अपने माता-पिता की आज्ञा पाकर प्रद्युम्न भी सदल-बल रवाना हुआ। स्वयंवर संपन्न हुआ। शुभांगी ने पहले ही प्रद्युम्न के सौंदर्य का समाचार सुनकर, उसे वरने का निश्चय किया था। इसलिए उसके गले में जयमाला डाल दी। स्वयंवर में आये हुए

सभी राजा उसके विजय से खुश हुए और वर-वधू एक दूसरे के योग्य हैं—यह देख उसकी प्रशंसा भी की।

प्रद्युम्न शुभांगी के साथ विवाह करके उसे साथ ले घर लौटा। कुछ समय बीतने पर उस दंपति के एक पुत्र पैदा हुआ। वही अनिरुद्ध है। अनिरुद्ध ज्यों-ज्यों बढ़ता गया त्यों-त्यों उसने सभी शस्त्र-शास्त्र-विद्याएँ सीखीं और वह विवाह के योग्य बना।

रुक्मी के रुक्मवती नामक एक पोती थी जो रुक्मी के पुत्र की बेटी थी। वह देखने में सुन्दर थी। सुशीला ऐसी थी कि उसके गुणों पर राज-परिवार के सभी लोग मुग्ध थे। जब वह विवाह के योग्य बनी तब एक सुन्दर और वीर राजकुमार के साथ उसकी शादी करने का रुक्मी ने संकल्प किया। वह एक अच्छे वर की खोज में था। यह बात श्रीकृष्ण के कानों में पड़ी। तब कृष्ण ने सोचा कि उस कन्या का विवाह अपने ही परिवार में हो जाय तो बड़ा अच्छा होगा। यह बात कृष्ण ने प्रद्युम्न से कही। कृष्ण का आदेश पाकर प्रद्युम्न ने रुक्मी के पास समाचार भेजा कि उस लड़की का अनिरुद्ध के साथ शादी करें। रुक्मी ने भी पुरानी दुश्मनी को भूलकर इस प्रस्ताव को मान लिया। शादी पक्की हो गयी। विवाह में भाग लेने बलराम-कृष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, रुक्मिणी और कई यादव प्रमुख गये। विवाह बड़ी धूम-धाम से संपन्न हुआ।

जब सब लोग बड़े उत्साह में थे, तब वेणुधारी, श्रुतर्वा, अंशुमान, जयत्सेन वगैरह दाक्षिणात्यों ने अपने मित्र रुक्मी के कान भरे—"तुम जुए में प्रवीण हो। बलराम को भड़काओ। वह जुए का सनकी है। उसे पराजित कर हम फिर से अपनी प्रतिष्ठा पायेंगे।"

"इसको ले जाइये, चोर की तरह भाग रहा है। मेरे बच्चों को कुचल डालेगा।" मंडप में से सांप ने कहा।

"आहा! मनुष्य के इस बच्चे के सब कोई दोस्त हैं! मनुष्य के बच्चे! जरा दूर हटो। हे जहरीले प्राणियो! जाकर छुप जाओ। मैं इस दीवार को गिराने जा रहा हूँ।" काआ बोला।

उसने संगमरमर की नक्काशी की गयी दीवार में ढूँढकर दरार देखी, निशान के लिए दो-तीन बार हल्के से अपनी चोंच मारी। इसके बाद अपने शरीर को छः फुट ऊपर उठाकर, छः बार जोर से प्रहार किये। नक्काशी की गयी कारीगरी चूर-चूर हो धूल की तरह नीचे गिर गयी जिससे वहाँ पर बहुत धूल उठी। उसमें जो छेद हो गया था, मौगली ने झांककर बाहर देखा, भालू पर एक हाथ, और बघेल पर दूसरा हाथ डालकर, दोनों से गले लगाया।

भालू ने मौगली को प्रेम से गले लगाके पूछा—"बेटा! घायल तो नहीं हुए हो!"

"घावों की क्या बात बताऊँ! भूख भी तो लग रही है, बाप रे बाप! आप दोनों भी घायल हो गये? अरे! खून भी तो बह रहा है!" मौगली ने कहा।

पानी के हौजों और मकानों के पास भी मरे पड़े बन्दरों को देख बघेल अपने होंठ चाट कर बोला—"केवल तुम ही लोग घायल नहीं हुए हैं!"

"कोई बात नहीं। जान बची, लाखों पाये! तुम जिन्दा हो, बस, यही हमारे लिए खुशी की बात है!"

"यह सब बाद को देखेंगे। पहले काआ को धन्यवाद दो, मौगली! अगर वह नहीं होता तो यह लड़ाई संभव न होती, तुम भी न बचते।" बघेल ने कहा।

मौगली काबा की ओर मुड़ा। काबा का सर मौगली के सर से एक फुट ऊपर हिल रहा था।

"ओह! मनुष्य का बच्चा यह है? हाँ, उसका शरीर बड़ा मुलायम है। अरे! धुँधली रोशनी में तुमको देख शायद मैं मरकट समझूँ! खबरदार, बेटा!" काबा बोला।

मौगली ने काबा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और यह भी बताया कि जरूरत पड़ने पर शिकार करने में मदद दूँगा। काबा क्षण-भर अपनी गर्दन को मौगली के कंधे पर रखकर, आगे बढ़ने का आशीर्वाद देते हुए बोला—"चंद्रमा था अस्त हो रहा है। अब तुम अपने दोस्तों के साथ जाकर सो जाओ। यहाँ पर होनेवाला कर्मकांड तुम्हारे देखने लायक नहीं है।"

चाँद पहाड़ों की ओट में छिप रहा था। भालू पानी पीने चला गया था। बघीरा अपने सारे बदन को साफ़ कर रहा था। काबा मकान पर रेंगते चला गया। मरकट उस धुंधले अंधेरे में दीवारों पर एक दूसरे से सटकर बैठ गये।

"चंद्रमा डूब गया है, तुमको कुछ दिखाई देता है?" काबा ने पूछा।

"देखते तो हैं, काबा।" मरकटों ने जवाब दिया।

"हिले-डुले नहीं। भूख का नाच देखिये।" यह कहते काबा अपने सर को इधर-उधर घुमाते, एक बड़े वृत्त में दो-तीन बार घूम आया, फिर बाएँ ओर से अपने शरीर को तरह-तरह की भंगिमाओं में घुमाने लगा। आठ की संख्याएँ, पंचकोण चतुर्भुज दीखते गायब हो रहे थे।

भालू और बघीरा के चेहरे फीके पड़ गये। वे काबा के शरीर की भंगिमाओं को अचरज में आकर देख रहे थे।

"मरकटो! पास आइये।" काबा बोला।